'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ५९ | वाराणसी, मंगलवार, १९ मई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

चूरू (राज०) २३-३-'५९

शरीर-परिश्रम की उपासना के बिना समाज प्रमाद और आलस्य के गर्त में गिर जायगा

सरकारी कर्मचारी भी जनता के सेवक हैं

कल हमने कहा था कि सरकार के ५५ लाख नौकर हैं, जो उत्पादक शरीर-श्रम नहीं करते। उनका जीवन-मान ऊँचा है। वे लब्धप्रतिष्ठ हैं। इससे एक मध्यम वर्ग खड़ा हो गया है, जो कि देश के लिए भार है। हमारी यह बात सुनकर एक अधिकारी ने हमें सवाल पूछा है और लिखा है कि "इस तरह से खुले आम यह ब त कही जाने से जनता के मन में हमारे लिये नम्रता की भावनाएँ नहीं रहतीं और उधर काम करने से हमारा भी उत्साह कम हो जाता है, जब कि हम सेवा करना चाहते हैं।" भाइयो! मैं सरकारी कर्मचारियों को निन्दित करना नहीं चाहता। उनके लिए मेरे मन में आदर है। यदि मेरे मुँह से उनके आदर को कम करनेवाला कोई शब्द निकल गया हो तो मैं दिल खोलकर क्षमा माँग लेता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हर शख्स के मन में आत्म-सम्मान हो। समाज की धारणा में मुख्य और महत्त्व का गुण—आदर है। जो समाज आदर खोयेगा, वह समाज निष्क्रिय हो जायगा।

सरकारी सेवक वस्तुतः जनता के सेवक हैं। मैं जानता हूँ कि उन सेवकों में कई लोग ऐसे हैं, जो सचमुच ही सेवा करना चाहते हैं। आम जनता से भी उनका परिचय है। ऐसे वे हैं भी पक्षमुक्त। पक्षमुक्त समाज की स्थापना करना ही हमारा उद्देश्य है। इसलिए सरकारी कर्मचारियों को मैं अपनी ही जमात का मानता हूँ। मुझे जब-जब भी उनकी सभा में बोलने का अवसर मिला, तब-तब मैंने इसी बात को दुहराया है और मेरा सौभाग्य है कि सरकारी कर्मचारी भी मुझे अपना मानते हैं।

मैं सबका प्यारा हूँ

सरकारी कर्मचारियों की तरह दूसरे लोग भी मुझे अपना ही समझते हैं। किसी से यदि कोई विचार नहीं मिलते हैं, तब भी हमारे साथ सभी दिल खोलकर चर्चाएँ करते हैं। कांग्रेस-वालों से बातें होती हैं, पी० एस० पी० वालों से होती हैं और कम्युनिस्टों से भी होती हैं। सभी पार्टियों में हमारे मित्र हैं और हरएक का दिल हमारे लिए खुला है। दूसरी पार्टियोंवाले तो हमारे कार्यक्रम से सहमत हैं ही, लेकिन अब तो कम्युनिस्ट भी कहने लगे हैं कि 'तुम्हारा कार्य यशस्वी हो तो हमे खुशी है, किन्तु हमें उसकी सफलता के बारे में शंका है।' केरल के मुख्य मंत्री श्री नम्बूद्रीपाद ने कहा है It can be alternative to Communism. एक जिम्मेवार कम्युनिस्ट नेता इस तरह बोलता है तो यह एक बहुत बड़ी बात है। यह ठीक है कि उन्होंने अपने वाक्य में 'अगर' डाल दिया है, परन्तु उनके मन में ऐसा विश्वास तो निर्माण हो ही गया है कि इस मार्ग से लोग धीरे-धीरे आयेंगे। कुछ दूसरे लोग भी इस आन्दोलन की गति को धीमी बताते हैं। लेकिन हम कहना चाहते हैं कि यह आन्दोलन गहराई में ले जानेवाला है। इसलिए इसमें कितनी जमीन मिली या बँटी, यह सवाल गौण है। हमारी मुख्य चीज तो यह है कि यह विचार सर्वमान्य हो रहा है। अब इसके खिलाफ कोई भी नहीं है।

राजनैतिक पक्षवाले हमसे दिल खोलकर बातें करते हैं, उसी तरह जगह-जगह सरकारी कर्मचारी भी बाते करतें हैं। सरकार चाहे किसी भी पक्ष की हो, परन्तु सरकारी अधिकारियों से वह यही अपेक्षा रखती है कि वे पक्षमुक्त भाव से प्रजा की सेवा करें। हम समझते हैं कि राजनैतिक पक्षवालों से भी हमारे ज्यादा नजदीक सरकारी कर्मचारी हैं। इनसे मेरा विशेष प्रेमसम्बन्ध है। इस सम्बन्ध के बावजूद मैंने जो उनसे सम्बन्धित बातें कहीं, उसके पीछे मेरी क्या दृष्टि है, अब वही आपके सामने रखूंगा।

संघर्षों का बुनियादीकरण

आज जो कुल दुनिया में कशमकश चल रही है, उसके कई कारण हैं। 'शरीर-परिश्रम टालने की वृत्ति' उसमें सबसे बड़ा कारण है। इन दिनों कुछ लोग शरीर-परिश्रम करते हैं और कुछ लोग शरीर-परिश्रम टालते हैं। जो लोग शरीर-परिश्रम करते हैं, उनके दिलों में भी उस काम के लिए आदर नहीं है। कोई ऐसी लाचारी है, जिससे काम करना पड़ता है। अगर वह लाचारी न रहे तो आज जो काम करते हैं, वे लोग भी इस काम को छोड़ देंगे। शरीर-परिश्रम के लिए किसी में निष्ठा नहीं है।

वकील, डॉक्टर, व्यापारी, शिक्षक, मंत्री, संन्यासी आदि कोई भी शरीर-श्रम नहीं करते। वे लोग जो प्रामाणिकता से सेवा करते हैं, वह भी बेकार नहीं है, लेकिन उनके द्वारा शरीर-परिश्रम न करने से समाजिक मूल्य नष्ट होते हैं। बड़े-बड़े लोग शरीर-परिश्रम नहीं करते हैं, इसीलिए आज जो साक्षात् उत्पादक श्रम करते हैं, वे लोग नीची श्रेणी के माने जाते हैं। उन्हें मेहनताना कम दिया जाता है और उनके प्रति आदर भी नहीं दिखाया जाता। इसीसे आज किसान क्या सोचता है? क्या चाहता है? यही कि मुझे जो काम करना पड़ता है, उससे मेरा लड़का बच जाय। वह भी कुर्सी पर बैठे और कम-से-कम मेहनत में ज्यादा से ज्यादा इज्जत प्राप्त करे। किसान शरीर-श्रम से हट रहा है। दूसरे लोग शरीर-श्रम करते नहीं। इसीसे उत्पादन घटता है। आवश्यकताएँ बढ़ाएँ और उत्पादन घटाएँ, यही कशमकश का कारण और झगड़ों की बुनियाद है।

श्रमहीन जीवन आदर के योग्य नहीं

हमारे देश में पहले शरीर-परिश्रम के प्रति निष्ठा थी। बड़े-से-बड़े लोग शरीर-परिश्रम करने में गौरव समझते थे। दूसरे कामों से ज्यादा उत्साह उत्पादक शरीर-परिश्रम में आता था। 'अन्नं बहु कुर्वीत, तद् व्रतम्' अन्न उपजाने का व्रत लेना ही इस बात का परिचायक है। आज 'अधिक अन्न उपजाओ' का नारा लगाया जाता है, पर अन्न उपजाता कौन है? सरकारी तंत्र से लोगों को हिदायत मिलती है, वह ऊपर की ऊपर रह जाती है। बड़े-बड़े नेता श्रम करते नहीं। व्यापारी, वकील, डॉक्टर, विद्यार्थी, भक्त, संन्यासी भी श्रम करते नहीं। स्त्रियाँ भी श्रम नहीं करतीं तो फिर श्रम करेगा कौन? यहाँ मेहतरों को सबसे ज्यादा शरीर-श्रम करना पड़ता है और उन्हें ही सबसे घृणित, तिरस्कृत, माना जाता है। इस हालत में देश का कैसे चलेगा?

गिबन नाम के एक मशहूर लेखक ने रोमन साम्राज्य के पतन का इतिहास लिखा है। उसमें उसने बताया है कि 'जब रोम के लोग शरीर-परिश्रम से घृणा करने लगे और शरीर-परिश्रम से बचनेवालों को ऊँची निगाह से देखने लगे, तभी रोम का पतन होना प्रारंभ हुआ।' रोमन की घटना से हमें सबक लेना चाहिए और यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि श्रमहीन जीवन आदर के योग्य नहीं है।

क्या एक-दूसरे का काम करना घृणित है?

एक बार बड़ी फजर में हम घूमने जा रहे थे। थोड़ी दूर गये तो देखा कि नदी के किनारे एक भाई कपड़े धो रहा था। हमने उससे पूछा 'इतने अंधेरे में कपड़े क्यों धो रहे हो'? उसने कहा 'मेरी पत्नी बीमार है। उसके कपड़े धोने में मुझे दिन में शरम महसूस होती है, इसलिए अभी धोने आ गया हूँ।' मतलब यह कि पत्नी का कपड़ा धोने में भी शरम आने लगी है। पति के कपड़े धोना पत्नी के लिए शरम की बात नहीं है, लेकिन पत्नी का कपड़ा धोना पति के लिए शरम की बात है!

मैला उठाकर गाड़ी में डालने का काम मेहतरानी करती है और मेहतर गाड़ी चलाता है। वह भी मैला उठाना अपनी शान के खिलाफ समझता है। यानी बहनों को हमने कितना नीचा मान लिया। उन्हें वेदाध्ययन का अधिकार भी नहीं दिया है। इस प्रकार का वर्गभेद और जातिभेद हमारे देश में था, उस पर मुहर लगायी अंग्रेजों की तालीम ने। पहले जो निम्न वर्ग के लोग थे, उन्हें यह तालीम नहीं दी जाती थी। अंग्रेजी तालीम पाने के लिए सभी मालिक वर्ग के लोग आगे आये। श्रम न करनेवाले मालिक पवित्र और श्रम करनेवाला मजदूर अपवित्र! मालिक मजदूर के हाथ का खाना नहीं खायेगा!

अंग्रेजी शिक्षा का परिणाम

मनु ने लिखा है काम करनेवालों के हाथ सदा पवित्र रहते हैं। जिस हाथ को मिट्टी लगी हुई है, मजदूर यदि उसी हाथ से खाना खाये, तब भी वह पवित्र ही माना जायगा। ब्राह्मण दस दफा हाथ धोयेगा, पर मजदूर बिना हाथ धोये खा सकता है। श्रम के प्रति इतना आदर! आज यही सभ्यता नीचे गिरते-गिरते कहाँ तक पहुँच गयी है! काम करने मात्र से इन्सान को अपवित्र माना जाने लगा है—यह सब अंग्रेजी शिक्षा का परिणाम है।

अंग्रेजों ने उच्च वर्गवालों को तालीम दी और वह भी ऐसी तालीम दी कि उनमें शरीर-परिश्रम करने का सामर्थ्य ही नहीं रहा। केवल किताबी विद्या सिखला दी। अब उस वर्ग के लोग हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि अपनी मातृभाषा में भी नहीं बोल सकते। कोई भी काम हो तो धड़ा-धड़ अंग्रेजी में बोलना शुरू कर देते हैं। इससे इनके और आम जनता के बीच में एक दीवाल खड़ी हो गयी है। पहले से जो वर्ण-व्यवस्था थी, वह अंग्रेजी विद्या के कारण बिगड़ गयी, परन्तु जाति-भेद बढ़ गया।

विद्वानों की संगति में रहनेवाले बिचारे ये नौकर!

हर एक हाईस्कूल में ८-१० शिक्षक होते हैं। वहाँ सैकड़ों विद्यार्थी पढ़ते हैं, परीक्षा देते हैं और पास होते हैं। पर उसी हाईस्कूल में ३-४ नौकर भी होते हैं। वे दस-बीस वर्षों तक वहाँ काम करते हैं, शिक्षकों की संगति में रहते हैं, परन्तु उन्हें विद्या का स्पर्श भी नहीं होता। जैसे आते हैं, वैसे के वैसे रह जाते हैं। शिक्षकों की संगति में कितने ही विद्यार्थी विद्वान हो जाते हैं, पर उनका कोई विकास नहीं होता।

विद्यार्थी कभी झाड़ू नहीं लगायेंगे। मास्टरसाहब और हेड-मास्टर साहब भी कभी झाड़ू नहीं लगायेंगे। झाड़ू लगाना इस तालीम में सिखाया ही नहीं जाता। काम करना भी नहीं सिखाया जाता। इधर हम भागवत में क्या पढ़ते हैं? कृष्ण जैसे महाराज लकड़ी चीरने, गोबर लीपने, घोड़ों का खरहा करने और गायें चराने का काम करते थे। राजसूय यज्ञ के समय युधिष्ठिर से भगवान कृष्ण ने काम माँगा। उन्होंने कहा 'आपको क्या काम दें? आप तो हमारे लिए पूजनीय हैं।' भगवान ने कहा मैं बेकार नहीं रह सकता। युधिष्ठिर बोले 'हम भी आप को काम नहीं दे सकते, इसलिए आप अपनी इच्छा से जो चाहें सो काम ढूँढ़ लीजिये। भगवान ने जूठी पत्तलें उठाने तथा गोबर से लीपने का काम लिया। कर्मयोग की महिमा भगवान कृष्ण के जीवन में प्रगट हुई।

संन्यासी और सेवा

हम भगवान की महिमा गाते हैं, लेकिन करते क्या हैं? कर्मयोग से हमारा सम्बन्ध कहाँ है? भक्त काम नहीं करते, संन्यासी सेवा नहीं करते, ज्ञानी झाड़ू नहीं लगाते। मेरे एक मित्र ने संन्यास लेने का सोचा। उसके पिता बहुत घबराये। वे मेरे पास आये और कहने लगे कि मेरे लड़के को समझाइये। वह संन्यास लेने जा रहा है। हमने तो समझा था कि वह बुढ़ापे में हमारी सेवा करेगा। लेकिन वह होने चला संन्यासी! मैंने कहा कि संन्यास ले लेगा तो क्या आपकी सेवा नहीं करेगा? जरूर करेगा।

भगवान शंकराचार्य दर-दर घूमे, वे जगह-जगह जाकर लोगों को समझाते थे, ज्ञान देते थे, परन्तु आजकल लोग समझते हैं कि संन्यासी सेवा नहीं करेगा। सेवा लेगा। संन्यास लिया है तो क्या सेवा करने से भी संन्यास ले लिया है?

हमारे देश में कर्म से इतनी नफरत है कि न मालूम यह देश कैसे ऊपर उठेगा। अच्छे लोग श्रम नहीं करते। इससे समाज के टुकड़े हो जाते हैं। हिन्दुस्तान में पहले वर्ण-व्यवस्था थी, जिसमें हर काम की योग्यता में कोई फर्क नहीं था। वैश्य प्रामाणिकता से काम करता तो वह भी उसी मोक्ष का अधिकारी होता, जिस मोक्ष का अधिकारी वेदाध्ययन करनेवाला ब्राह्मण है। आज इससे उलटा हो गया। कोई व्यवस्था नहीं है। पढ़े-लिखे लोगों को ज्यादा तनख्वाह मिलती है और शरीर-परिश्रम करनेवालों को बहुत कम मजदूरी मिलती है। यह भेद मेरी समझ में नहीं आता। कोई ज्यादा विद्वान है, इसलिए क्या उसे ज्यादा भूख लगती है?

सेवा और पैसे में मेल नहीं है

सेवा आध्यात्मक वस्तु है। दाम देह की वस्तु है। दोनों की तुलना नहीं हो सकती। अभी मैं व्याख्यान दे रहा हूँ। इसके बदले में आप मुझे क्या दाम देंगे? मान लिजिये, आपकी बहन, माता, भाई या और कोई बीमार है, आप उसकी सेवा करते हैं तो उस सेवा का क्या मूल्य होगा? सेवा शारीरिक हो या मानसिक, उसका मूल्य पैसे में नहीं हो सकता। सेवा नैतिक वस्तु है, पैसा भौतिक। नैतिक वस्तु की कीमत भौतिक वस्तु में नहीं हो सकती। इसलिए हम मानते हैं कि शरीर-परिश्रम टालना, शरीर-परिश्रम करनेवालों को ही मानना और इस तरह दामों में फर्क रखना मानवता के खिलाफ है, गुनाह है, पाप है।

पचपन लाख नौकर याने एक मध्यम वर्ग खड़ा हो गया। यह मध्यम वर्ग ऊपरवाले वर्ग के साथ मिलेगा तो निचला वर्ग मार खायेगा और यह भी मार खायेगा! इसलिए मध्यम वर्ग को निचले वर्ग के साथ आ जाना चाहिए। चक्की पीसना, पानी खींचना, लकड़ी चीरना आदि काम मध्यम वर्ग के लोग करें तो वर्ग-परिवर्तन की दिशा में एक सक्रिय कदम होगा। उत्पादक शरीर-परिश्रम करना हमारा धर्म है। इसके बिना हिन्दुस्तान की उन्नति नहीं होगी।

संपत्ति का विसर्जन और श्रम का संकल्प

नयी समाज-रचना के लिए दो काम करने होंगे। एक तो संपत्ति का विसर्जन, दूसरा हर रोज शरीर-श्रम करने का संकल्प। संपत्ति-विसर्जन के लिए आप अपनी आय का छठा हिस्सा दीजिए और शरीर-परिश्रम के लिए दो घण्टा खेत में काम कीजिए। मैंने अपनी जवानी के तीस वर्ष इसी काम में बिताये हैं। इसलिए मैं विश्वासपूर्वक कहना चाहता हूँ कि शरीर-श्रम अत्यन्त आवश्यक है।

एक बार एक संन्यासी से मिलने का मौका आया। उन्होंने कहा 'रामनाम का जप बहुत अच्छा है'। मैंने कहा:–'हाँ, मगर उसके साथ-साथ चरखा चलाना और भी अच्छा है'। 'मुख में राम हाथ में काम।' गीता में कहा है 'मेरा स्मरण करो और युद्ध करो'। भजन करते-करते काम करना अच्छा होता है। हम हमेशा यही कहते हैं। शरीर-परिश्रम के बिना जो जीयेगा, वह चोर का जीवन जीयेगा। वेदों में भी कहा गया है' 'शरीर से परिश्रम करने से पाप धुल जाता है।'

मैं चाहता हूँ कि धर्म-स्थापना नये सिरे से हो। मैंने कई बार कहा है कि अभी धर्म-स्थापना नहीं हुई है। हमें जीवन में धर्म सीखना होगा। ध्यान, ज्ञान, चिन्तन भी सीखना चाहिए। परन्तु एकान्त में ध्यान करें और शरीर-परिश्रम से घृणा करें, यह बात गलत है। काम करते-करते ज्ञान-ध्यान साधना चाहिए। केवल ध्यान से धर्म नहीं होता। धर्म-साधना के लिए कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय आवश्यक है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

रोपड़ (पंजाब) ५-५-'५९

भाखरा नांगल को तीर्थ बनाने के लिए जीवन में करुणा और समानता का विकास करना होगा

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद हमारे इस देश में कई बड़े कार्य किये गये हैं। शरणार्थियों की समस्या हल हुई। राजा-महाराजाओं की समस्या हल हुई। जिस तरह शान्ति से यहाँ रियासतों का एकीकरण हुआ, वह तवारीफ में लिखने लायक घटना है। करोड़ों लोगों को मतदान का हक मिला और उन्होंने उसका इस्तेमाल किया। कइयों को शक था कि हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में—जहाँ के लोग पढ़ना-लिखना कम जानते हैं–चुनाव कैसे होंगे? परन्तु वह सब ठीक ढंग से हो गया। बारह वर्षों में ऐसे और भी कई काम हुए हैं। लेकिन उन्होंने लोक-मानस को इतना नहीं छुआ, जितना कि सर्वोदय के काम ने छुआ है।

भाखरा नांगल कब तीर्थ बनेगा?

पं० नेहरू भाखरा नांगल को इस जमाने का तीर्थस्थान कहते हैं, लेकिन गुरु नानक ने कहा है—'तीरथ नहावा जेति समावा, बिनु भावे की नाई करि' मैं तीरथ में नहाने के लिए राजी हूँ; परन्तु भगवान राजी हो, तभी नहाऊँगा। वह राजी न हो तो नहाकर क्या करूँगा? भाखरा नांगल डैम बना, यह बहुत बड़ा काम हुआ। कहा जाता है कि इससे एक करोड़ एकड़ जमीन को पानी मिलेगा। पहले पाँच या छह एकड़ में जितना उत्पादन होता था, उतना अब एक एकड़ में होगा। अगर मेरे हाथ में सरकार होती तो मैं जमीनवालों से कहता कि आपकी जमीन में इतना अधिक उत्पादन हो रहा है, इसलिए आप अपनी जमीन का छठा हिस्सा गरीबों के लिए दें। अगर वे नहीं देते तो उन्हें भी पानी नहीं दिया जाता। क्योंकि भाखरा नांगल से हिन्दुस्तान के दूसरे लोगों को जो लाभ नहीं मिलता, वह उन्हें क्यों मिलना चाहिए? जिन्हें पानी मिलेगा, उनकी खुश्क जमीन तर बनेगी। वे लोग छठा हिस्सा देने से कुछ खोयेंगे नहीं। एक करोड़ एकड़ जमीन का छठा हिस्सा सोलह लाख एकड़ से भी ज्यादा होता है। उससे १६ लाख परिवार बसेंगे। भूमिवानों के साथ-साथ सोलह लाख भूमिहीन परिवारों का भी जीवन-निर्वाह हो जाय तो भाखरा डैम के लिए गरीबों की दुआ मिलेगी। फिर वह सचमुच ही तीर्थ-क्षेत्र बन जायगा। हम उसमें नहा सकेंगे।

योजनाओं से लाभ कब होगा?

चन्द लोगों को पानी मिलने से माना कि देश का उत्पादन

बढ़ेगा। लेकिन केवल उत्पादन बढने से क्या होता है? सारा शरीर स्वस्थ है, लेकिन पाँव में फोड़ा है तो हमारा सारा ध्यान पाँव की तरफ ही जाता है। क्योंकि वह दुःखी है।

एक माँ के पाँच बच्चे थे। पाँचों खेलने के लिए गये। उनमें से एक कहीं खो गया। उससे माँ को बहुत परेशानी हुई। रात-दिन उसका नाम ले-लेकर माँ रोने लगी। चारों लड़कों को भी उसकी तलाश में भेजा। आखिर वह मिला। माँ खुश हो गयी। माँ को खुश होते देख कर चारों लड़कों ने पूछा कि हम चारों तुम्हारे पास थे, तब भी तुम्हें उतनी खुशी नहीं थी, जितनी अभी हो रही है। इसका क्या कारण है? क्या तुम भी पक्षपात करती हो? माँ ने जवाब दिया—मेरे बच्चो! इसमें पक्षपात नहीं, माँ का दिल है। अभी तुम लोग माँ का दिल नहीं पहचानते। तुम चारों मेरे पास थे, सुखी थे। लेकिन जो मेरे पास नहीं था, वह दुःखी था। उसका दुःख मेरा दुःख है। उसका सुख मेरा सुख!

हमारी पंचवर्षीय योजना में भी सर्वप्रथम हमें यह सोचना चाहिए कि हम दुःखियों, गरीबों को क्या मदद दे रहे हैं? सिर्फ उत्पादन बढ़ने से गरीबों का काम नहीं होगा। जिनके पास आज जमीन है, संपत्ति है, दौलत है, उन्हें और आराम मिल जायगा। तो उससे गरीबों को क्या लाभ होगा? हाथी के पाँव की तरह शरीर का कोई एक हिस्सा बढ़ जाय तो लाभ नहीं खतरा ही है। सभी अवयवों का समान विकास होना चाहिए। भाखरा डैम बना, यह अच्छा हुआ, मुझे उसका कोई पश्चात्ताप नहीं है और न मैं उसका विरोधी ही हूँ, लेकिन मैं सर्वप्रथम यह चीज देखना चाहता हूँ कि गरीबों को कितना लाभ मिलता है। उस डैम से जितनी जमीन को पानी मिलनेवाला है, उसका छठा हिस्सा गरीबों के लिए दान मिलना ही चाहिए।

निर्माण-कार्य में धर्म प्रकट हो

"वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे' जो दूसरों की पीड़ा जानते हैं, वैष्णव कहलाते हैं। पर आज हम गरीबों की पीडा कहाँ देख रहे हैं? भूमि-हीनों की ओर हमारा ध्यान कहाँ जाता है? भाखरा नांगल में जाकर हम क्या देखते हैं? वहाँ भी विषमता है। बिचारे मजदूर कितनी तकलीफ उठा कर काम करते हैं। जो मरते हैं, पता नहीं उनके परिवारों के लिए क्या किया जाता है। इसलिए भाखरा डैम तब तीर्थस्थान बनेगा, जब उसकी बनावट में धर्म प्रकट होगा। भाखरा डैम अच्छा है। उससे पानी मिलता है, उत्पादन बढ़ता है, परन्तु साथ ही साथ उसके निर्माण-कार्य में धर्म प्रकट होना चाहिए।

भुवनेश्वर का मन्दिर डेढ़ सौ साल तक बनता रहा। वहाँ काम करने के लिए मजदूरों के अलावा निकटवर्ती गाँवों के लोग आते थे। वे प्रतिदिन डेढ़-दो घंटा श्रमदान देते थे। सभी यह महसूस करते थे कि यह हमारा मन्दिर बन रहा है। इसीलिए वह धर्म-मन्दिर बन सका। जहाँ जबर्दस्ती से काम किया जाता है, वहाँ धर्म प्रकट नहीं होता। इन दिनों जो सरकारी श्रमदान चल रहा है, इसके मानी हैं बेगार। क्या इसी श्रमदान की बुनियाद पर देश का निर्माण होगा? राष्ट्र की ताकत बढ़ेगी? निर्माण-कार्य के पीछे एक लगन चाहिए, जीवन चाहिए, निष्ठा चाहिए और प्रेम चाहिए।

भारत की विशेषता

हमारा देश बहुत बड़ा है। इसकी स्थापना किसी ने नहीं की। इजराईल की स्थापना हुई। पाकिस्तान की स्थापना हुई। इसी तरह अन्य दूसरे देशों की स्थापना हुई है। लेकिन हमारे देश की स्थापना किसीने नहीं की। यह स्वयंभू महादेव है। यहाँ पर आर्य, अनार्य, शक, हूण, मुगल, अंग्रेज, पोर्चुगीज आदि हजारों जमातें आयीं। ईरान से भागकर पारसी भी आये। इन सबका यहाँ स्वागत हुआ। ये सभी लंबे समय से इस देश में अत्यन्त निर्भयतापूर्वक रह रहे हैं। यह भारत की विशेषता है। मुझे गुरु नानक का एक वचन याद आता है, जिसमें भगवान के बारे में कहा गया है—"थाप्या न जाई, कीता न होई, आपै आप निरंजन सोई।" किसी ने उसकी स्थापना नहीं की, जैसे पत्थर को सिन्दूर लगाकर भगवान की स्थापना की जाती है। किसीने उसको किया नहीं, जैसे मूर्ति की (बनायी) जाती है। वह स्वयंभू निरंजन है। ठीक वही वर्णन भारत पर लागू होता है। भारत की विशेषता को अक्षुण्ण रखने के लिए अगर हम प्यार से मिल-जुलकर रहें तो शक्तिशाली सिद्ध हो सकते हैं।

दो बातें करनी होंगी

हमें एकता स्थापित करने के लिए दो बातें करनी होंगी। सामाजिक ऊँच-नीचता को मिटाना तथा अमीर-गरीब, भूमिवान-भूमिहीन के भेद मिटाना। हमें गरीबों की पूरी चिंता करनी चाहिए। जब तक गरीबी नहीं मिटती, तब तक गरीबों को मदद देते ही रहना होगा। सामाजिक भेद मिटाने की प्रक्रिया भी बराबर चलती रहनी चाहिए। 'नानक उत्तम नीच न कोई'। हिन्दुस्तान में ये बातें होती हैं तो मैं बोलूँगा—जय भाखरा जय नांगल।

आज एक भाई ने पूछा कि आप छठा हिस्सा माँग रहे हैं और हम छठा हिस्सा दे देते हैं तो फिर तो हमें छुटकारा मिल जायगा? फिर तो और देने की नौबत नहीं आयेगी न? मैंने उसे कहा कि तुमने शादी की तो बताओ कि तुम बँध गये या छूट गये। शादी में बँधते हो तो दान में क्यों छूटना चाहते हो? दान में लाभ है तो बराबर दान देते ही जाओ।

दीनबन्धु!

दीनबन्धु एन्ड्रूज की कहानी मशहूर है। उनके पास एक नौकर था। वे उसे ४० रुपया तनख्वाह देते थे। दो-चार महिने के बाद एन्ड्रूज ने नौकर से पूछा कि तुम्हें यह रुपया कम तो नहीं पड़ता है। क्या कुछ रुपया और बढ़ाऊँ? उसने कहा—हाँ, ज्यादा नहीं, थोड़ा बढ़ा दीजिये। फिर कुछ दिन बाद उन्होंने नौकर को बुलाया एवं पूछा कि क्या पैसे की और जरूरत है? उसने कहा—हाँ, एक बच्चा पैदा हो गया है। उन्होंने रुपये बढ़ा दिये। यह सिलसिला चलता रहा। वे नौकर को बुलाते, नौकर माँगता और वे बढ़ा देते थे। आखिर नौकर ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज अब मुझे रुपयों की जरूरत नहीं है। मेरा पेट भर गया। दीनबन्धु को इसी विशेषता के कारण लोग अपने ही घर का आदमी मानने लगे। कितनी महान सेवा थी उनकी!

हाथ दिये कर दान रे

प्रेमी मनुष्य कभी यह नहीं कह सकता कि हमने तुम्हें एक बार दे दिया है, अब दुबारा तो नहीं माँगोगे? जब भी माँगनेवाला आता है, तभी प्रेमी आदमी कुछ-न-कुछ दे देता है। माँगनेवाला देनेवाले के पास आता है तो वह उस पर उपकार करने के लिए आता है। हमने मानव का चोला धारण किया है। हमारे दो हाथ हैं। ये दोनों हाथ दान देने के लिए हैं। हमें माँगनेवालों से कहना चाहिए कि जब तक तुम्हारी जरूरत पूरी नहीं होती, तब तक माँगते जाओ। क्या माँ अपने बच्चे से कहती है कि

बेटा तुम्हारा पेट भर गया, अब मत माँगो। वह अपने बेटे को प्यार से बुलाती है, दूध पिलाती है और बार बार पिलाती है।

समाज दो प्रकार का होता है। गेहूँ के ढेर जैसा और कुएँ के पानी जैसा। गेहूँ के ढेर में से एक सेर गेहूँ निकाला जाय तो उतना गड्ढा पड़ जाता है। गेहूँ के दाने अपनी-अपनी जगह बने रहना चाहते हैं। उनमें कुछ ही महात्मा होते हैं, जो खड्डे को भरने के लिए दौड़ते हैं। किन्तु कुएँ में ऐसा नहीं होता। एक बाल्टी पानी निकालिये तो भी कुएँ में खड्डा नहीं पड़ता। पानी की बूंदों में एक-दूसरे के प्रति इतना प्यार होता है कि सभी खड्डा भरने के लिए दौड़ पड़ते हैं, भले ही पानी का लेबल कुछ नीचे गिर जाय। समाज में भी इतना ही प्यार होना चाहिए। कहीं कोई विपत्ति हो तो सभी को मिलकर उसका बँटवारा कर लेना चाहिए। दुःख बाँटने से घटता है। गरीबी बाँटने से ही मिटती है। गरीबी बाँट लेने से लोगों में उत्पादन बढ़ाने का उत्साह पैदा होता है।

नीचेवालों की ओर देखें!

आर्थिक विषमता को मिटाना है। वह एकदम नहीं मिटेगी। उसे धीरे-धीरे घटायेंगे तो आखिर में मिट जायगी। इसलिए हमें गरीबों के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए। पहाड़ का पानी किधर जाता है? नीचे की ओर—समुद्र की ओर। लोटाभर पानी डालिये, तब भी वह नीचे की ओर ही बहेगा। आप पानी से पूछिये कि कहाँ जा रहे हो? वह कहेगा—सबसे नीचे समुद्र नाम का एक गढ़ा है, उसे भरने के लिए जा रहा हूँ। जैसे चारों ओर से पानी समुद्र को भरने को दौड़ता है, वैसे ही हम सब के दिलों की दौड़ गरीबों की ओर होनी चाहिए। अपने से जो ज्यादा दुःखी हैं, उन्हें ढूँढ-ढूँढ कर मदद पहुँचानी चाहिए। अगर हम अपने से ऊपरवालों की ओर देखेंगे तो मत्सर पैदा होगा और नीचेवालों की ओर देखेंगे तो दया पैदा होगी। 'धवल धरम दया का पूत'। दया होने से ही धर्म रहेगा।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे विचार सुनते तो बहुत हैं, पर दान नहीं देते। इस पर मैं कहता हूँ कि मेरे काम में अदाता कोई नहीं है। सब के सब दाता हैं। कुछ आज के दाता हैं, कुछ कल के और कुछ परसों के। मेरा विश्वास है कि जब ये देने लग जायेंगे, तब लेनेवालों के हाथ थक जायेंगे।

एक का सौ

सात साल पहले कौन मानता था कि इस तरह लाखों एकड़ जमीन मिलेगी। आज मिल रही है या नहीं? लाखों एकड़ जमीन मिल गयी तो लोग पूछने लगे हैं कि करोड़ एकड़ जमीन कब मिलेगी? हम कहना चाहते हैं कि वह मिलने ही वाली है। आज इसलिए नहीं मिली है कि वह कल मिलेगी। लोगों ने देना शुरू कर दिया है। अब सतत देने की प्रक्रिया जारी करनी है, यही लोगों के ध्यान में आने की देरी है।

पानी, पहाड़, पेड़ हमें परोपकार की तालीम देते हैं। हम एक दाना बोते हैं तो भगवान उसके सौ बना देता है। कंजूस मानव भगवान से दलील करता है कि मैं कुछ न दूं तो आप कम-से-कम ग्यारह दाने ही दे दीजिये। इस पर भगवान कहता है कि यह जमा का हिसाब नहीं है, गुणा का हिसाब है। तुम एक दाना दोगे तो मैं सौ दूंगा और शून्य दोगे तो मैं भी शून्य ही दूँगा। शून्य का गुणा शून्य ही होता है।

हमें सोचना चाहिए कि हम गरीब हैं तो समाज में कुछ ऐसे भी हैं, जो हमसे भी ज्यादा गरीब हैं। हमें उनकी मदद में दौड़ जाना चाहिए। हम गरीबों की मदद करेंगे और समाज में दान का प्रवाह सतत बहता रहेगा तो आपसी झगड़े नहीं होंगे, खूनी क्रान्ति नहीं होगी।

पंजाब में पाँच नदियाँ बह रही हैं। उनकी तरह आपके हृदय भी उदार बनें तो राष्ट्र का बहुत बड़ा काम होगा और जन-जीवन में करुणा, समानता तथा धर्म का विकास होगा।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

रोपड़ (पंजाब) ५-५-'५९

ग्राम-स्वराज्य की बुनियाद पर ही खादी का भव्य भवन खड़ा हो सकता है

मैं—किस ओर?

आप लोग जानते होंगे कि मेरी जवानी के तीस साल रचनात्मक कामों में बीते हैं। हिन्दू-मुस्लिम-एकता, गाँवों की सेवा, विद्यार्थियों की सेवा, ध्यान, चिंतन, मनन, लेखन, रसोई का काम, भंगी का काम आदि अनेकों प्रवृत्तियों में मैं लगा रहा। हर रोज घंटों काम करता था। उस जमाने में गांधीजी विद्यमान थे। वे ही मेरा प्रचार कर देते थे। मैं propogandist नहीं हूँ। कभी अपना प्रचार करना मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरा प्रचार-कार्य हवा से चलता था। बापू के पास जो लोग मिलने आते थे, वे उन्हें चर्चा के लिए मेरे पास भेज देते थे। घर बैठे गंगा आती थी। उस समय खयाल ही नहीं हुआ कि मुझे भी कभी सार्वजनिक कामों में ध्यान देना पड़ेगा। ज्ञान, ध्यान आदि में मैं पूरी तरह से मगन था। वैसे आज भी मैं अपने चिंतन में मगन हूँ। पर आज की हालत और उस हालत में बहुत फरक है। उन दिनों अन्दर-बाहर एक था। अन्दर-बाहर एक होना महात्माओं का लक्षण है। दुर्जनों का लक्षण है—अन्दर एक, बाहर दूसरा। आजकल मेरा मन तो अध्ययन, ध्यान, चिंतन में मगन है, लेकिन बाहर से भूदान-ग्रामदान का काम करता हूँ, लोक-सम्पर्क साधता हूँ, लोगों के झगड़े सुनता हूँ। इस प्रकार मेरे अन्दर-बाहर में अन्तर आ गया है।

खादी-कार्यकर्ताओं के बीच अपने आपको पाकर कभी-कभी ऐसा लगता है कि मैं अपनी ही मंडली में बैठा हूँ और कभी-कभी लगता है कि मैं आप से कोसों दूर हूँ। मुझे ऐसा भास क्यों होता है, इसी सम्बन्ध में कुछ विचार मैं अभी आप के सामने रखूँगा।

आजादी से पहले की खादी

जब हमारा मुल्क आजाद नहीं था, तब यह खादी आजादी का लक्षण थी, परराज्य के खिलाफ बगावत थी। खादी का काम करनेवाले लोग सरकारी नजरों में 'आँख की किरकिरी' थे। खादीवालों को देखकर सरकारवालों के मन में संशय होता था। बापू इस बात से परिचित थे। सचाई को छिपाना उन्हें कत्तई पसंद न था। इसलिए उन्होंने खादीवालों को राजनैतिक क्षेत्र से अलग रखा। उन्होंने नियम बना दिया कि जो लोग राजनैतिक क्षेत्र में काम करना चाहें, वे खादी के कार्य से मुक्त हो जायँ। इसी कारण उस समय कुछ कार्यकर्ता खादी के काम

में रहते थे तो कुछ कार्यकर्ता राजनैतिक काम में। खादी तथा रचनात्मक कार्य में लगे हुए कुछ लोगों को बापू की राजनीति में भी दिलचस्पी नहीं थी। कभी-कभी वे उनके खिलाफ बोलते थे। लेकिन बापू का अपना एक तरीका था। वे जिसका जितना उपयोग हो सकता था, उतना उपयोग ले लेते थे। सत्य की रक्षा के लिए बापू ने खादी के काम को एक मर्यादा में रखा था। लेकिन फिर भी सरकार को यह आशंका बनी रही कि बापू ने खादीवालों की एक ऐसी सुरक्षित सेना बना रखी है, जो मौके पर आयेगी। उन दिनों खादीवालों को बहुत त्याग करना पड़ता था। खादी याने सरकार के विरुद्ध मोर्चा! इसी कारण खादी प्राणमयी थी। अब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद भी खादी चल रही है, लेकिन इसमें वह बात नहीं है, जो पहले थी।

खादी से रक्षण लें नहीं, खादी को रक्षण दें

अब खादीवालों को खोना कुछ नहीं है। यदि खादीवाले प्रामाणिकता से मेहनत करें तो अच्छे सेवक कहला सकते हैं और प्रामाणिकता से मेहनत न करें तो खराब सेवक कहलायेंगे। पहले हम खादी की रक्षा करते थे, अब खादी हमारी रक्षा करती है। हम उसका पालन-पोषण करने की हैसियत में नहीं हैं। पहलेवाली खादी की जो रूह थी, वह गायब हो गयी है, ऐसा प्रतीत होता है। इसलिए अगर हम वर्तमान परिस्थिति में परिवर्तन करें और खादी द्वारा रक्ष्य नहीं, बल्कि खादी के रक्षणकर्ता बनें तो वह पहले जैसी जानदार चीज बन सकती है।

जब मैं खादी का काम करता था, तब भी खादी का व्यापार चलता था। परन्तु मैंने उस व्यापार को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया। मैं उस काम से विद्यार्थियों को तैयार करता था, यज्ञ के लिए कातने को कहता था और गाँव-गाँव में खादी का संकल्प करवाता था। मैंने हमेशा खादी को विचाररूप में स्वीकार किया है। खादी एक विचार है, तत्त्व है, दर्शन है। इसलिए मैं ऐसे ही प्रयोगों का हामी रहा, जिससे यह क्रान्तिकारी तत्त्व प्रगट हो। आदिम काल की खादी लाचारी की खादी थी। वह न होती तो हम नंगे रहते। लेकिन इस जमाने की खादी क्रान्तिकारी तत्त्व लेकर प्रकट हुई। मैं उस काम में तन्मय हो गया। उससे ऐसे कितने ही विद्यार्थी तैयार हुए, जो आज भी क्रान्तिकारी काम में संलग्न हैं।

एक ओर तो एकान्त में मेरा यह सारा कार्यक्रम चल रहा था, दूसरी ओर बापू ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए मेरा नाम जाहिर किया। उन्होंने देश को मेरा परिचय देते हुए कहा कि 'इस शख्स के पास कार्यकर्ताओं की सेना है।' मेरे काम से बापू को बहुत आकर्षण मालूम हुआ। खैर, वह खादी ही ऐसी चीज थी, जिसे हमने आजादी के लिए बनाया था, आज वह हमारी रक्षक बन गयी है।

खादी से ही स्वराज्य और ग्रामस्वराज्य

खादी के साथ स्वराज्य का सम्बन्ध न जुड़ा होता तो स्वराज्य न मिलता। गांधीजी से पहले दादाभाई नौरोजी तथा लोकमान्य ने स्वराज्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया और उन्होंने स्वदेशी का सम्बन्ध स्वराज्य से जोड़ा। गांधीजी ने खादी को माध्यम बनाया। कुछ लोगों ने टीकाएँ भी कीं और कहा कि स्वराज्य के साथ खादी का क्या सम्बन्ध है? बापू ने बताया: खादी के कारण गरीबों का प्रेम प्राप्त करेंगे और उसीसे स्वराज्य-प्राप्ति के लिए शक्ति संचित होगी। सूत कातकर स्वराज्य प्राप्त करनेवाली बापू की बात को बहुतों ने नहीं माना, फिर भी उनके समर्थ नेतृत्व की कीमत समझकर इसे कड़वी दवा के रूप में निगल लिया। स्वराज्य का सीधा सम्बन्ध खादी से नहीं आया।

अब सामाजिक और आर्थिक स्वराज्य के साथ खादी का सीधा सम्बन्ध आता है। इसलिए इस समय खादी का मूल्य बहुत बढ़ गया है। यह बात अब हमारे कार्यकर्ताओं के ध्यान में आनी चाहिए।

खादी के लिए सरकारी संरक्षण प्राप्त करें

आजकल कहा जा रहा है कि खादी को अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहिए। इस पर मैं कहता हूँ कि क्या खादी जानवर है, जो अपने पाँवों पर खड़ी होगी? दूसरे में मैं यह भी कहता हूँ कि आपकी माँ ने आपका लालन-पालन किया। अब आप जरा लायक बन गये तो क्या यह कहना चाहते हैं कि हे माँ अब तू स्वावलंबी बन जा। सेवा करने का समय आते ही ऐसा कहना क्या आपको शोभा देगा? मिल के मुकाबले में खादी नहीं टिक सकती। इसलिए खादीवालों का कर्तव्य है कि वे सरकार से खादी के लिए संरक्षण प्राप्त करें। लेकिन अफसोस है कि संरक्षण प्राप्त नहीं किया गया, न किया जा रहा है और संभवतः नहीं किया जा सकेगा।

खादी को सरकारी संरक्षण देनेवाले मेरे मित्र हैं। हमें एक-दूसरे के प्रति आदर है। इसके बावजूद मैं यह बात कह रहा हूँ। लेकिन मेरे कहने का आशय यह नहीं है कि वे लोग गांधीजी के जमाने में खादी को स्वीकार करते थे और अब नहीं कर रहे हैं। वे लोग गांधीजी को भी कहते थे कि 'खादी पर हमारा विश्वास नहीं है। खादी का अर्थशास्त्र हमें स्वीकार नहीं है। लेकिन अभी हम लोग उसे लोक-सम्पर्क के तौर पर स्वीकार कर लेते हैं।' उन्होंने उस समय खादी को लोक-सम्पर्क के लिए माना, किन्तु अब हमारा फर्ज हो जाता है कि हम खादी का आर्थिक पहलू सिद्ध करें।

केवल सामरिक सामर्थ्य पर्याप्त नहीं

बावजूद इसके कि गांधीजी ने खादी के आर्थिक पहलू को सिद्ध करते हुए सैकड़ों लेख लिखे थे, अभी हमारे देश के एक बड़े नेता कह रहे हैं कि हमें ऐसे उद्योगों का निर्माण करना चाहिए, जिनमें सामरिक सामर्थ्य हो। खादी में सामरिक सामर्थ्य नहीं है। शान्ति का सामर्थ्य है। शान्ति-सामर्थ्य की कीमत सामरिक सामर्थ्य से अधिक है या नहीं—यह निर्णय आपको करना होगा।

मैं मानता हूँ कि हमें फौलाद और दूसरे उद्योग भी चाहिए, परन्तु यह भूलना नहीं चाहिए कि बाहरी फौलाद (steel) की तरह अपने अन्दर भी एक फौलाद है। उसे प्राप्त करने की अत्यन्त आवश्यकता है। हमें देश की आध्यात्मिक शक्ति जागृत करनी होगी। अभी हमारे पास सामरिक सामर्थ्य की कमी है, इसीलिए सेना पर तीन सौ करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं। हिम्मत की जगह सेना ने ली है। सेना से क्या आपका बचाव हो सकता है? पलासी की लड़ाई में अंग्रेजों से हमारी लड़ाई हो रही थी। अंग्रेजों की सेना अनुशासित थी और हमारी सेना में थी फूट! चन्द घण्टों में हमारी सेना हार गयी और बंगाल अंग्रेजों के हाथ में चला गया। देश में बहादुरी न हो, एकता न हो तो कैसे काम चलेगा? केवल सामरिक सामर्थ्य ही पर्याप्त

नहीं है। आध्यात्मिक सामर्थ्य उत्पन्न करने, एकता पैदा करने तथा आत्मविश्वास जागृत करने में खादी का बहुत बड़ा स्थान है।

सर्वोदयवाले दकियानूस नहीं हैं

बीच में खादी की प्रतिष्ठा एकदम गिर गयी थी। लोगों ने कातना छोड़ दिया था। कुछ लोग व्रत को भंग नहीं करना चाहिए, इसी दृष्टि से कातने की प्रक्रिया को चालू रखे हुए थे, परन्तु वे भी मायूस हो गये थे। वैसे समय में भूदान-आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। भूदान के कारण कार्यकर्ताओं में उत्साह आया, लोगों का ध्यान हिन्दुस्तान की ओर आकृष्ट हुआ और सभी समझने लगे कि सर्वोदयवालों की भी एक हस्ती है।

इतने में आया अम्बरचर्खा। हम लोगों ने उसका स्वागत किया। लोग समझते थे कि सर्वोदयवाले नये औजारों से परहेज करते हैं, परन्तु अम्बर के कारण लोगों को अपनी उस धारणा में परिवर्तन करना पड़ा। सभी समझने लगे कि सर्वोदय-वाले दकियानूस नहीं हैं। उनमें भी कुछ अकल है। परमेश्वर ने अकल बाँटी, तब ये बिल्कुल गैरहाजिर तो नहीं थे।

कुछ लोग कहते हैं कि खादी मध्यबिन्दु है और बाकी के समस्त कार्य उसके इर्द-गिर्द हैं, जैसे सूर्यनारायण के इर्द-गिर्द दूसरे ग्रह हैं। चर्खा सेन्टर में है। मैं भी मानता हूँ कि चर्खा सेन्टर में है। परन्तु वह जिस वर्तुल में है, उस वर्तुल को भी कोई पृष्ठभूमि चाहिए या नहीं? भूमि इसकी पृष्ठभूमि है। इसलिए हमने भूमि का मसला हाथ में लिया है। स्वराज्य-प्राप्ति से पूर्व हम इस मसले को हाथ में नहीं ले सकते थे, इसीलिए बापू ने इस प्रश्न को नहीं छोड़ा। लेकिन अब हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि भूमि की बुनियाद पर ही खादी खड़ी हो सकती है। पहले भूमि का मसला हल करना होगा, ग्रामस्वराज्य खड़ा करना होगा और फिर खादी का संकल्प सिद्ध करना होगा

खादी का राज्य हो

मैं केवल खादी नहीं, खादी का राज्य चाहता हूँ। खादी याने करुणा का राज्य! खादी से आज गरीबों को कुछ मदद मिल जाती है, यह अच्छा है, परन्तु इससे खादी का राज्य नहीं होगा। हिन्दुस्तान में अगर पुलिस और लश्कर से ही शांति की स्थापना होती रही तो यहाँ खादी का राज्य नहीं हो सकेगा। वह तो तब होगा, जब हम खादीवाले दंगों के बीच में पड़कर शान्ति-स्थापित कर सकेंगे। आज जाति, पंथ, धर्म आदि अनेकों प्रश्नों को लेकर झगड़ा हो जाता है, फिर वहाँ सरकार जाती है, गोली चलाती है। इस हालत में अगर हम अलग खड़े देखते रहेंगे तो खादी की रक्षा नहीं कर सकेंगे। खादीवालों को शान्ति के रक्षक होना चाहिए।

अभी डॉक्टर गोपीचन्दजी ने कहा कि आपकी संस्था का पंजाब की हर तहसील से संबन्ध है तो हम चाहते हैं कि आप शान्ति-स्थापना का पूरा काम उठा लें। पाँच हजार की जनसंख्या-वाले क्षेत्र में आपका एक सेवक रहे। वह सभी लोगों से परिचय रखे। उनकी सेवा करे। इस प्रकार यदि आप करते हैं तो पंजाब से जो मेरी तीन हजार शान्ति-सैनिकों की माँग है, वह पूरी होगी और खादी की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

खादी के साथ खेती

मैं एक बात और सुझाना चाहता हूँ। वह यह कि आपको हर रोज एक घंटा खेती करनी चाहिए। उससे आपको ताजगी रहेगी। किसानों की समस्याएँ आप देखेंगे तो फिर समाधान ढूँढने के वास्ते भी मिलेंगे। कार्यकर्ताओं को एकांगी नहीं बनना चाहिए। एक अंग से सबको पकड़ने की चीज है यह खादी। किसी की चोटी पकड़ने से वह मनुष्य ही हमारे हाथ में आ जाता है। हम खादी में एकाग्र हों, परन्तु एकाग्र होकर सारे समाज को खींचने की कला सधनी चाहिए। आप किसानों के जितने निकट जायेंगे, उतने ही देहातों की सेवा के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे। खादी को शक्तिशाली सिद्ध करने के लिए इस दिशा में आप जितना पराक्रम कर सकते हैं, वह अवश्य कीजिए। यही मेरी आप से प्रार्थना है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

बलाचौरा (पंजाब) ७-५-'५९

विश्वास की शक्ति के बिना न व्यक्ति टिकेगा, न समाज टिकेगा!

पंजाब में कई मसले हैं। हिन्दू, मुसलमानों के मसले हैं। सिखों के मसले हैं। भिन्न-भिन्न पार्टियों के मसले हैं। भाषा का भी मसला है। सारा का सारा वातावरण मसलामय ही है। ऐसे समय हमारे आ जाने से लोग आशा करते हैं कि हम मसले हल करें, झगड़े मिटायें। हर धर्म और पक्ष के लोग आ-आकर हमसे इसी संबंध में चर्चाएँ करते हैं। इसीलिए मैं कहना चाहता हूँ कि अब यहाँ झगड़े बन्द हों—ऐसी ख्वाहिश पैदा हुई है, इसीसे झगड़े मिटने की राह खुलनेवाली है।

एकता ही हमारा हृदय है

पाकिस्तान बनने के कारण पंजाब को काफी दुःख भुगतना पड़ा है। पंजाब ने जिस स्थिति का सामना किया, उसे देखते हुए तो यहाँ जो झगड़े चल रहे हैं, वे बहुत ही कम हैं। ताज्जुब होता है कि इतनी मुसीबतें झेलने के बाद भी यहाँ इतने कम झगड़े कैसे हैं? जहाँ जितनी मुसीबतें होती हैं, उतने ही झगड़े बढ़ते हैं। लेकिन यहाँ वैसा नहीं हुआ। पंजाब भारत का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। हमारी अपनी एक सभ्यता है। उसके पीछे हजारों वर्षों का इतिहास है। वेद, उपनिषद्, गीता, गुरु-वाणी आदि के जरिये यहाँ एक सद्विचार की अक्षुण्ण परम्परा चालू रही है। उसीने यहाँ की हवा में एकता की भावनाएँ उत्पन्न की हैं। पाकिस्तान की घटना ने लोगों के दिल तोड़ दिये, फिर भी जिन विचारों की बुनियाद यहाँ पड़ी है, वह कहाँ जा सकती है। हम उन्हीं विचारों का सम्बल पाकर आज भी गाते हैं 'ना कोई बैरी, नाहीं बिगाना, सकल संगी हमको बनि आई'। यहाँ चाहे झगड़नेवाले झगड़ते रहें, लेकिन सबके दिलों में एकता की ख्वाहिश है। गुरु नानक ने यही बात कही है 'आई पन्थी सकल समाजी'। आओ, इस पन्थ में आ जाओ। हम सब एक ही समाज के हैं।

इन्सानियत पर यकीन करनेवाला जादू

टूटे हुए दिलों को जोड़ने की प्रक्रिया हिन्दुस्तान में बराबर जारी है। हमने भूदान, ग्रामदान भी इसीलिए चलाया है कि लोगों के टूटे हुए दिल जुड़ जायँ। दिल टूटने के कई कारण होते हैं। धार्मिक झगड़ों से दिल टूटते हैं, भाषाई झगड़ों से दिल टूटते हैं और जमातों के झगड़ों से भी दिल टूटते हैं। आर्थिक संकट आने से भी जुड़े हुए दिलों का सदा के लिए बिलगाव हो जाता

है। इसलिए इन सारे कारणों को मिटाने के वास्ते हम चाहते हैं कि आज के ग्रामस्वराज्य में परिवर्तन हो जाय। मैं ग्रामस्वराज्य का सन्देश लेकर ही आपके बीच आया हूँ। ग्रामस्वराज्य दिल जोड़ने की एक तरकीब है।

दिल की बात दिल जानता है। मेरे मन में क्या है, इस बात का स्पर्श आपके दिलों को होता है, इसलिए यहाँ के लोग आते हैं और मुझे कहते हैं कि मैं झगड़े मिटाने का काम करूँ। क्या मेरे पास कोई जादू है जो मैं झगड़े मिटा दूँ! हाँ, एक जादू है और वह यह कि मेरा इन्सानियत पर यकीन है। मैंने जाहिर किया है कि इन्सान के लिए जो ताकतें मददगार हो सकती हैं, उनमें सबसे बड़ी ताकत है—विश्वास।

तीनों की जरूरत है

आप चाहते हैं कि सर्वत्र शांति हो, सुख हो, समृद्धि हो। कहीं कोई कष्ट न पाये। कभी किसी को परेशान न होना पड़े तो वेदान्त, विज्ञान और विश्वास इन तीनों की जरूरत है। मैंने इसके लिए एक श्लोक बनाया है :—

"वेदान्तो विज्ञानं विश्वासश्चेति शक्तयतिस्रः।
यासां स्थैर्ये नित्यं शान्तिः समृद्धिर्भविष्यतो जगति।"

आज कम्युनिस्ट पार्टी के मुखिया हमसे मिलने आये थे। उन्होंने बहुत ही प्रेमपूर्वक बातें कीं। वे कहने लगे कि आपका आन्दोलन बड़ा शुभ है। इससे लोगों के दिलों को जोड़ने का काम हो रहा है। इसी प्रकार सभी दलों के मुखिया मुझ से मिलते हैं, बातें कहते हैं और आखिर में यह कहते हैं कि 'आप वर्तमान के झगड़े मिटाने की कोई युक्ति निकालें तो बड़ा अच्छा हो। सर्वोदय-विचार सबके झगड़े मिटा सकता है।'

इस समय रूस और अमेरिका जैसे देश—जो कि अशान्ति के समान मुद्दैय्या कर रहे हैं—वे भी शान्ति चाहते हैं, समृद्धि चाहते हैं, सब की दौलत बढ़ाना चाहते हैं। इसलिए यदि हम सच्चे अर्थों में सुख, शान्ति और समृद्धि चाहते हैं तो हमारे लिए वेदान्त, विज्ञान एवं विश्वास निहायत जरूरी है।

छोटा मन नहीं टिकेगा

वेदान्त यानी सब वेदों का अन्त। धर्म के नाम पर जो काल्पनिक रिवाज चल पड़े हैं, उन सब के अन्त का नाम ही वेदान्त है। वेदान्त में वेदों का अन्त, बाइबल का अन्त और कुरान आदि अन्य धर्मग्रन्थों का भी अन्त हो जाता है। फिर रह जाता है एक—प्रेमधर्म। 'सब माहि रम रहिया प्रभु एक।' सब में एक ही प्रभु मानकर छोटे-छोटे भेदों को भूल जाने से ही समस्त धर्मों की एकता होगी।

विज्ञान लोगों को एक-दूसरे के साथ जोड़ेगा। विज्ञान के जमाने में छोटी-छोटी जमातें नहीं टिक सकतीं और न एक-दूसरे से अलग होकर ही रहा जा सकता है। आज हम घड़ी, पेन, चश्मा आदि कई ऐसी चीजें इस्तेमाल करते हैं, जो दूर-दूर से आती हैं। इस हालत में स्वावलम्बन की हम कितनी ही कोशिश करें, फिर भी हमारा सम्बन्ध सारी दुनिया के साथ आनेवाला है और दिनों-दिन हमारा जीवन मिला-जुला बननेवाला है। अभी चन्द घंटों में हम यहाँ से लंदन या मास्को जा सकते हैं। अब तो चन्द्रलोक पर जाने की बातें भी चल रही हैं, जो खयाली नहीं, असली बातें हैं। इस हालत में हम भेदों को प्रोत्साहन देकर कैसे टिके रह सकते हैं? हमें बड़ी जमात बनाकर रहना होगा। अब धर्म के संकुचित भेदों को वेदान्त मिटायेगा और जीवन के छोटे-छोटे फिरकों को मिटायेगा विज्ञान।

विश्वास ही महान शक्ति है

आज भाई-भाई में अविश्वास है, मित्र-मित्र में अविश्वास है, विभिन्न पक्षों, दलों और गुटों में अविश्वास है। परन्तु हम कहना चाहते हैं कि अविश्वास अब इस जमाने की चीज नहीं है। आज मानव के हाथों में इतने भयानक शस्त्रास्त्र आ गये हैं कि यदि एक-दूसरे पर अविश्वास करते रहेंगे तो मानव-समुदाय मिट जायेगा। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में किस तरह अविश्वास चलता है। एक-दूसरे की सीमा पर जो खेत हैं, वहाँ किसान आपस-आपस में लड़ते हैं तो उसे भी दो राष्ट्रों का झगड़ा माना जाता है। हिन्दुस्तान की तरफ से कुछ गलती हुई तो पाकिस्तान के अखबार बड़े-बड़े अक्षरों में उसे छापेंगे और पाकिस्तान की कुछ गलती हुई तो हिन्दुस्तान के अखबारों में छप जायगा। हिन्दुस्तान की भावना एक बाजू है और दूसरी बाजू है पाकिस्तान की भावना। आइक कभी बोलता है तो रूसवाले उस पर विश्वास नहीं करते। क्रुश्चेव बोलता है तो अमेरिकावाले सोचते हैं कि जरूर कुछ दाल में काला है। यहाँ पर भी सिखों के दो गिरोह में परस्पर अविश्वास है। अविश्वास से बात बनती नहीं है, बिगड़ती है। अगर हमारा दारोमदार केवल लाठी पर होता तो अविश्वास के परिणामस्वरूप कुछ सिरफुड़ौवल होकर ही रह जाती। लेकिन आज हमारे हाथों में हाइड्रोजन बम है। इसलिए अब अविश्वास के कारण सर्वनाश हुए बिना नहीं रहेगा।

जैसे हम मित्रों पर विश्वास करते हैं, वैसे ही प्रतिपक्ष पर विश्वास करना सीखें। विश्वास रखने से हम कुछ खोयेंगे नहीं। खोयेगा वही, जो विश्वासघात करेगा। बाबा के पास यही जादू है कि वह सब पर विश्वास रखता है। आज की सभा आरंभ करते समय कुछ शोरगुल हो रहा था। तब मैंने कहा कि अभी मैं धीरे-धीरे बोलूंगा। लेकिन जैसे ही बोलना शुरू किया, शोर बन्द! अगर धीरे बोलने से काम न चलता तो मैं मौन रहता। जैसे हिंसा में शस्त्र तीव्र से तीव्रतम हो जाते हैं, वैसे ही अहिंसा में सौम्य से सौम्यतम होते हैं। सर्वोदय की पद्धति में दूसरों पर विश्वास रखना ही बहुत बड़ा शस्त्र है।

[चालू]

अनुक्रम

१. शरीर-परिश्रम की उपासना के बिना समाज प्रमाद और आलस्य....
चुरू २३ मार्च '५९ पृष्ठ ४१३
२. भाखरा नांगल को तीर्थ बनाने के लिए जीवन में करुणा....
रोपड़ ५ मई '५९ ,, ४१५
३. ग्राम-स्वराज्य की बुनियाद पर ही खादी का भव्य भवन....
रोपड़ ५ मई '५९ ,, ४१७
४. विश्वास की शक्ति के बिना न व्यक्ति टिकेगा, न समाज....
बलाचौरा ७ मई '५९ ,, ४१९

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।